REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2025

आज की भारतीय राजनीति राम और कृष्ण के सन्दर्भ में : एक तुलनात्मक अध्ययन

सुश्री अनुष्का गौतम
नेट, (शोध छात्रा), दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर,
विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.

प्रो. कमलेश नारायण मिश्र
अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, मदन मोहन मालवीय पी.जी. कॉलेज
भाटपार रानी, देवरिया, उ.प्र.
(सम्बद्ध दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ0प्र0)

आज का समाज प्रतिदिन नये बदलाव को आत्मसात कर रहा है। हमारे संस्कृति में नित नये बदलाव दिख रहे हैं। ये बदलाव हमारी जीवनशैली का बदलाव भी है। हमारी सोच एवं समझ का बदलाव भी है। हमारे विचारों का बदलाव भी है और सबसे महत्त्वपूर्ण हमारे कर्मों का बदलाव भी है।

आज हम सभी कलयुग में जी रहे हैं। इससे पहले हमारे पूर्वजों ने सतयुग, त्रेता युग और और द्वापर युग देखा है। सतयुग 'सत्य का युग था', जहाँ किसी तरह के झूठ, छल और कपट का कोई स्थान नहीं था, त्रेता युग भगवान राम का युग था जहाँ मर्यादा को पूजा जाता था, वही द्वापर युग भगवान कृष्ण का युग था।

आज वर्तमान परिदृश्य में हमारे सामने दो ही नायक दिखाई पड़ते हैं और वे हैं राम और कृष्णा भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। भगवान राम धर्म प्रिय थे और धर्म के आगे वे हथियार भी डाल देते थे। पिता के आज्ञा का पालन हो या पत्नी का त्याग हो, उन्होंने हमेशा धर्म का निर्वहन किया। अपने कर्त्तव्य को सबसे ऊपर रखा। राम का सबसे प्रमुख गुण उनका कर्त्तव्य के प्रति अटूट समर्पण है। जब उन्हें वनवास को आदेश मिला तो उन्होंने बिना किसी विरोध के उसे स्वीकार कर लिया। यह केवल एक पुत्र का अपने पिता के प्रति सम्मान नहीं था बल्कि यह राज्य व्यवस्था और सामाजिक अनुशासन के प्रति प्रतिबद्धता का भी प्रतीक था। आज की राजनीति में यह गुण अत्यन्त आवश्यक है भगवान राम की नीतियाँ कहती हैं कि इंसान को निर्विवाद रहकर जीवन में सभी काम करने चाहिये। उनकी नीतियों में समाज का डर भी शामिल है। राम को जानने पर पता चलता है कि भगवान राम के कई फैसले इसलिये थे, क्योंकि उनका समाज वैसा चाहता था। अयोध्या की जनता के कहने पर ही तो उन्होंने माता सीता को अग्नि परीक्षा के बाद भी वन के लिये भेज दिया था। उन्होंने जाति, वर्ग या समुदाय के आधार पर भेदभाव नहीं किया निषाद राज, शबरी और हनुमान जैसे पात्रों के साथ उनका व्यवहार यह दर्शाता है कि वे सभी को समान दृष्टि से देखते थे। आज के भारत में सामाजिक और धार्मिक विभाजन अक्सर राजनीति का हिस्सा बन जाता है। वहाँ राम का यह आदर्श अत्यन्त प्रासंगिक है।

आज हमारा समाज न तो सच्चाई के साथ चल रहा है और न ही धर्म के साथ है आज छल–कपट, धोखेबाजी, अपने लाभ के लिये दूसरे को नीचा दिखाना। अपना मतलब निकालने के लिये दूसरों को मूर्ख बनाना चरम पर है। भारत की राजनीति में भी भ्रष्टाचार और परिवारवाद जैसे रावण और कंस हावी हैं। भगवान राम ने

रावण का वध किया, तो कृष्ण राज्य आ गया। लेकिन आज हर मोड़ पर अनेक ''रावण'' हैं और हर जगह 'कंस' हैं। इन अनेक 'रावण' और 'कंस' का वध राम की नीति से नहीं किया जा सकता है। इनके सुधार और संहार के लिये कृष्ण की नीतियाँ ही चाहिये।

भारत की राजनीति का स्वरूप पूरी तरह बिगड़ता जा रहा है शायद ही कोई राजनेता हो, जो समाज की चिंता करे। राम का शासन रामराज्य के रूप में जाना जाता है, जो आदर्श शासन व्यवस्था का प्रतीक है। इसमें न्याय, समानता, सुरक्षा और समृद्धि का समावेश था। राम के शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही थीं वो आज के लोकतंत्र की मूल आवश्यकतायें हैं।

भगवान श्री कृष्ण को एक बड़े नेतृत्वकर्त्ता और राजनीतिज्ञ के रूप में भी जाना जाता है। उनके कृष्ण एक महान प्रेरक भी थे। उन्होंने अर्जुन को गीता का उपदेश देकर उसे उसके कर्त्तव्य का बोध कराया। यह नेतृत्व का एक महत्त्वपूर्ण गुण है– लोगों को प्रेरित करना और उन्हें सही दिशा दिखाना। लेकिन आज जब देश में या राज्य में चुनाव होते हैं तो नेतृत्त्वकर्त्ताओं की शैली बेहद निराश करने वाली होती है। साम–दाम–दण्ड–भेद लगाकर नेता सत्ता को हासिल करना चाहते हैं। लेकिन वास्तविक रूप में कृष्ण की नीतियों का पालन करने पर ध्यान नहीं देते। अलबत्ता 'कंस' और 'रावण' जैसी चालों ओर तरकीबों पर ज्यादा गौर किया जाता नज़र आता है।

कंस का मानना था कि जो उसके जीवन के लिये खतरा है, उसे खत्म कर दो। लेकिन कृष्ण कहते हैं कि मर्यादा और धर्म की लड़ाई लड़ो फिर चाहे दुश्मन तुम्हारा अपना रिश्तेदार क्यों न हो। भगवान कृष्ण के आदर्श और सिद्धान्त सामयिक हैं। कृष्ण ने स्वयं को एक समाजवादी के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने कभी खुद को व्यक्तिवादी के रूप में प्रस्तुत ही नहीं किया है। कृष्ण का दर्शन राजनीति को एक आदर्श प्रारूप देता है। जो युगों–युगों तक प्रासंगिक है। राजनीति के साथ कृष्ण का दर्शन घुला–मिला हुआ है। पहले राज्य में राजगुरु और धर्मगुरु होते थे, जो राजा को धर्म के अनुसार, राजपाठ करने के निर्देश देते थे। कृष्ण ने महाभारत काल में अर्जुन का सारथी बनकर उन्हें गीता उपदेश दिया। गीता उपदेश जो धर्म का ही उपदेश था, लेकिन आज तो नेता धर्म के मार्ग को छोड़कर धर्म के नाम पर बाँटने की राजनीति करते हैं। इस तरह की राजनीति से जनता का भविष्य कभी उज्ज्वल नहीं हो सकता।

धर्म–अधर्म के युद्ध का एक संविधान होता है। मसलन युद्ध हमेशा सूर्योदय के बाद और सूर्यास्त तक ही होगा। दिन छिपने के बाद कोई शस्त्र नहीं उठाया जायेगा। महिलाओं पर हथियार नहीं उठाया जायेगा। दुश्मन को मारना है तो नाभि से ऊपर ही शस्त्र से प्रहार करना है इत्यादि।

आज के चुनावी महाभारत में किसी संविधान का अनुसरण नहीं होता है। कर्म और विकास पर वोट कोई नहीं माँगता है। राजनीति का संविधान कहता है कि देशहित के लिये पक्ष और विपक्ष को एक जुट होना चाहिये, लेकिन शायद ही ऐसा कभी देखने को मिलता हो कि देशहित और जनताहित की किसी नीति पर विपक्ष भी पक्ष के साथ खड़ा हुआ हो। आज सब अपने निजी लाभ के बारे में सोचते हैं। क्या कृष्ण ने कभी कहा कि सिर्फ अपना हित करो। कृष्ण कहते हैं कि युद्ध और मुकाबले में सब सम्भव है, लेकिन जो भी हो, वह मर्यादा और धर्म के दायरे में हो। भगवान कृष्ण 16 कला सम्पूर्ण थे। वह छलिया भी थे, चोर भी थे लेकिन उनका छल और चोरी करना किसी ऐसे ध्येय के लिये कभी नहीं था जिससे समाज का अहित होता हो।

श्री कृष्ण की समाज व्यवस्था या राज व्यवस्था सम्बन्धी सिद्धान्त आज के नेताओं को राजनीति में अपनाने चाहिये। कृष्ण व्यक्तिवादी नहीं बल्कि समाजवादी और राष्ट्रवादी थे। द्वारिका में जब कृष्ण ने अपना राज्य स्थापित किया तो वहाँ उन्होंने लोकतांत्रिक प्रणाली अपनायी थी। उन्होंने व्यक्ति से पहले समाज और देश को महत्व दिया था, लेकिन अब राजनीति व्यक्ति केन्द्रित हो रही है। उदाहरण के लिये अम्बेडकर के बाद दलितों के लिये आवाज, उठाने वाले कोई नहीं सब अपनी रोटियाँ सेंक रहे हैं। आज टूटे स्थानों पर आधारित इस राजनीति को बदलने के लिये समाज को भी जागरुक होना होगा।

भारतीय राजनीति अनेक स्तरों पर जटिल है। इसमें लोकतांत्रिक प्रक्रिया, सामाजिक विविधता, आर्थिक असमानता, वैश्विक दबाव और तकनीकी परिवर्तन शामिल हैं। भारत एक विशाल लोकतंत्र है, जहाँ विभिन्न वर्गों, भाषाओं और संस्कृतियों के लोग रहते हैं। यहाँ नेताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे सभी के हितों का संतुलन बनाये रखें।

आज आधुनिक राजनीति में गठबंधन एक महत्वपूर्ण तत्त्व बन गया है। यहाँ केवल आदर्शवाद से काम नहीं चलता, बल्कि रणनीतिक सोच और समझौते भी आवश्यक होते हैं।

आज राजनीति में नैतिक मूल्यों का ह्रास एक गम्भीर समस्या है। भ्रष्टाचार, सत्ता का दुरुपयोग और झूठे वादे आम हो गये हैं। इन सभी चुनौतियों के सन्दर्भ में राम और कृष्ण दोनों के सिद्धान्त प्रासंगिक हो जाते हैं। आज राम कृष्ण दृष्टिकोण, आदर्शवादी, यथार्थवादी, नेतृत्त्वशैली, नैतिक और अनुशासित रणनीति और लचीला निर्णय लेने का तरीका, सिद्धान्त आधारित, परिस्थिति आधारित राजनीति में उपयोगिता नैतिक आधार प्रदान करता है। व्यावहारिक समाधान देता है। राजनीति केवल राम के आदर्शों पर आधारित हो तो यह अत्यधिक कठोर और अव्यवहारिक हो सकता है। वहीं यदि केवल कृष्ण की रणनीति अपनायी जाये तो नैतिकता का संकट उत्पन्न हो सकता है। इसलिये आज की राजनीति में दोनों का संतुलन आवश्यक है। आदर्श नेतृत्त्व वह होगा जो राम की तरह ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ हो। कृष्ण की तरह रणनीतिक और व्यवहारिक हो। सिद्धान्तों पर अडिग रहे, लेकिन परिस्थिति के अनुसार लचीला भी हो।

अंततः यह कहना उचित होगा कि आज की भारतीय राजनीति में न तो केवल राम पर्याप्त हैं और नहीं केवल कृष्णा दोनों के गुणों का समन्वय ही एक सशक्त और प्रभावी नेतृत्व की कुँजी है।

राम हमें सिखाते हैं कि राजनीति का आधार नैतिकता और धर्म होना चाहिये जबकि कृष्ण का मानना है कि इन मूल्यों की रक्षा के लिये व्यवहारिकता और रणनीति आवश्यक है। आज के समय में जब राजनीति लगातार बदल रही है और नयी–नयी चुनौतियाँ सामने आ रही हैं, तब यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, कि हम इन दोनों महान आदर्शों से सीखें और उन्हें अपने राजनीतिक और सामाजिक जीवन में लागू करें।

सन्दर्भ सूची

1. वाल्मीकि रामायण–महर्षि वाल्मीकि
2. रामचरितमानस–गोस्वामी, तुलसीदास
3. महाभारत–वेदव्यास
4. श्रीमद्भगवद्गीता–कृष्ण
5. The Difficulty of Being Good Gurucharan Das.
6. Jaya- An Illustrated Retelling of Mahabharat.
7. Sita : An Illustrated Retalling of the Ramayan.
8. Krishna : The Man and his philosophy . OSHo
9. Ramayan : A shortened Modern Prose version, R.K. Narayan.
10. The Bhagavad Gita for daily living-Eknath Easwaran.
11. Dharma : "Its Early History in law Religion and Narrative-A.K. Hitebeital.
12. ORF (Observer Research Foundation) paper, नीति और रणनीति पर आधुनिक दृष्टिकोण।